हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-७ अङ्क-२ सितम्बर, २०१०

सम्पादकीय

हिन्दी-दिवस

१४ सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाने की प्रथा है। इस दिन, हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने के अनेक वायदे किये जाते हैं, हिन्दी के पक्ष में अनेक भाषण दिये जाते हैं और समारोह आयोजित किये जाते हैं। परंतु हिन्दी की स्थिति में कोई सुधार होने की बजाय उसकी स्थिति पहले से अधिक ख़राब होती जाती है। कहने को तो हिन्दी भारत की राजभाषा है परंतु महाराष्ट्र की विधान सभा में एक सांसद जब हिन्दी में शपथ लेना चाहता है तो उसे ऐसा करने से रोका जाता है, उस पर जूते-चप्पल बरसाये जाते हैं। इसी प्रकार, जब दिल्ली के संसद-भवन में एक सांसद एक प्रश्न का उत्तर हिन्दी में देना चाहता है तो उससे माँग की जाती है कि वह अँग्रेज़ी में उत्तर दे। एक ओर, विदेशों में रहने वाले, भारतीय मूल के अनेक लेखक तथा कविगण हिन्दी की सेवा में संलग्न हैं तो दूसरी ओर, भारत में तेज़ी से हिन्दी को अँग्रेज़ी द्वारा विस्थापित किया जा रहा है। ऐसा क्यों है? अँग्रेज़ तो भारत छोड़ कर चले गये परंतु लगता है कि आज भी भारतीयों के मन में दासता की प्रवृत्ति विद्यमान है। अँग्रेज़ी अथवा अन्य विदेशी भाषाओं को सीखने में कोई हानि नहीं है परंतु किसी विदेशी भाषा को अपनी मातृभाषा से उच्चतर स्थान देने की भूल केवल भारतीय ही कर सकते हैं। यदि हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाना है तो सबसे पहले हिन्दी भाषी लोगों को हिन्दी का महत्व समझना होगा और अपने दैनिक जीवन में अँग्रेज़ी के स्थान पर हिन्दी का उपयोग करना होगा।

गत माह, मदर टेरेसा की जन्म-शताब्दी थी। १९९७ में ५ सितम्बर को उनका देहांत हो गया था। हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। सभी पाठकों को हिंदी-दिवस, पितृ-दिवस तथा इस महीने में पड़ने वाले विभिन्न त्योहारों की शुभकामनाएँ तथा ईद मुबारक।

इस अङ्क में पितृ-दिवस, हिन्दी-दिवस, जन्माष्टमी, ईद आदि विषयों पर कुछ रचनाएँ हैं। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा 'सूचनाएँ' स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके बिचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

प्रकाशन सम्बंधी सूचनाए

हिन्दी-पुष्प का उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है। हिन्दी-पुष्प में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के विचार उनके अपने होते हैं, उनके लिये सम्पादक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं। हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से 'हिन्दी-संस्कृत' फ़ंट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।
कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें-

Editor, Hindi-Pushp, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121).
ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है -
dsrivastava@optusnet.com.au

अपनी रचनाएँ भेजते समय, अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।

काव्य-कुंज

कृष्ण जन्माष्टमी

- हेमानी किरण, मेल्बर्न

जी चाहे कभी बनूँ सुदामा,
सारे चने मैं ख़ुद खा जाऊँ।
उद्धव बन कर ब्रज में जाऊँ,
सब को मधुर संदेश सुनाऊँ॥

तुम जीवन रथ के बनो सारथी,
अर्जुन बन कर मैं इतराऊँ।
संग बैठ कर जमुना तट पर,
मधुर प्रसंग कोई सुनूँ-सुनाऊँ॥
बन बरसाने में त्रिविध समीरा,
राधा संग मैं तुम्हें झुलाऊँ।

कारागृह में प्रकट भये प्रभु,
मिटा अंधेरा, भयी है भोर।
आन मिलो, हरि आन मिलो,
म्हारा कान्हा माखनचोर॥

पापा का प्यार जो देख पाते

- रचना श्रीवास्तव, डल्लास, अमेरिका

पापा के ठहाकों से
जो गूँजता था घर कभी
आज उनकी
बोली सुनने को तरस जाता है मन
तुम्हारे कमरे में
बैठे न जाने क्या
देखते रहते हैं
अकेले में कई बार
बातें करते हैं
पापा अब बुझ से गए हैं

उनकी डाँट को
गाँठ बाँध लिया
पर न देखा कि
तुम्हारी सफलता को
'मेरे बेटे ने यह किया है'
'मेरे बेटे को यह मिला है'
कह कर
सबको कई बार बताते थे
तुम्हारे सोने के बाद
तुम्हारे कमरे में कई बार
झाँक आते थे

क्यों नहीं
देखा तुम ने कि
खीर पापा कभी
पूरी कटोरी नहीं खाते थे
तुम्हारी पसंद के
फल लाने कितनी दूर तक जाते थे
अपने वेतन पर लिया पेशगी कर्ज़
तुम्हारी मोटर साइकिल लाने को
काम के बाद भी किया काम
तुम्हें, मुझे ऊँची शिक्षा दिलवाने को

तुमने उन्हें दिया
मधुमेह, उच्च रक्तचाप,
छुप के रोती
आँखों का मोतिया
ले ली उनकी मुस्कान
उनकी बातें
उनका गर्व से उठा सिर
और सम्मान

यदि तुम यह सब जानते
तो शायद नहीं जाते
आ जाओ
इस से पहले
कि कहीं देर न हो जाए
पितृ-दिवस पर तो पिता को
बेटे का उपहार दे जाओ
तुम आ जाओ।

ईद

- डा० सैफ़ चोपड़ा, मेल्बर्न

यक़ीन के साथ की है,
रमज़ान में इबादत
ईद-उल-फ़ितर के दिन आज,
रब ने की इनायत।

पाकीज़ा दिन आया,
दिल में ख़ुशी है आयी।
रौनक बढ़ी, फ़िज़ा है,
मालिक की है क़रामात

जो आरज़ू है दिल में,
कर सामने ख़ुदा के।
करता है वह मेहरबाँ,
तेरी-मेरी हिफ़ाज़त।

रब को बजा के सिज़दा,
करता है सैफ़ दुआ यह
दुनिया में तू हमेशा रखना
हमें सलामत।

कितने रूप तुम्हारे

- इंदुमती पाण्डेय, मेल्बर्न

कितने रूप तुम्हारे मोहन,
कितने रूप तुम्हारे
सकल सृष्टि में व्याप्त हो रहे,
सब हैं रूप तुम्हारे

विश्व विधाता, हे जगत्राता,
दिव्य सृष्टि संकल्प किया
पंचतत्व में वितरित हो कर,
क्षिति, जल, पावक रूप लिया
पवन और आकाश रूप में
प्रकट भये तुम प्यार
सब के हो रखवारे 'प्रियतम'
सब हैं रूप तुम्हारे
कितने रूप...............

अंशुमालि में स्वर्ण किरण संग
जग में ज्योति जगाते
सुप्त प्रकृति को जाग्रत कर के
नव-जीवन सरसाते
बन हिमांशु नीहार कणों में
तृण का रूप संवारे
सब के हो रखवारे 'प्रियतम'
सब हैं रूप तुम्हारे
कितने रूप...............

जल में तृषा-तृप्ति बन पोषक
तोषक रूप तिहारे
विष्णुप्रिया धरणी है मन्दिर
दीपक चन्द्र सितारे
गगन मण्डल - गोलोक धाम है
पवन देव रखवारे
सब के हो रखवारे 'प्रियतम'
सब हैं रूप तुम्हारे
कितने रूप...............

शून्य-भीति पर चित्र अलौकिक
हेतु रहित विस्तारा
तुम हो यन्त्री, यन्त्र जीव जग
नाच रहा जग सारा
सब के हो रखवारे 'प्रियतम'
सब हैं रूप तुम्हारे
कितने रूप...............

जी हाँ, हिन्दी एकमत से राजभाषा बनी

- नवोदिता माथुर, बेलॉरट, विक्टोरिया

भारत सरकार की राजभाषा संविधान के अनुसार तो हिंदी है, पर हम सब जानते हैं कि सरकार का सब काम अब तक अँग्रेज़ी में ही होता है। इस विसंगति को देखते हुए कुछ लोग बहुधा एक कहानी सुनाते हैं और वह यह कि हिन्दी - अँग्रेज़ी में से राजभाषा किसे बनाया जाए, इस पर संविधान सभा में गरमागरम बहस हुई थी। बहस के अंत में वोटिंग हुई तो हिंदी के पक्ष और विपक्ष में बराबर - बराबर वोट आए। अब संविधान सभा के अध्यक्ष को अपना 'कास्टिंग वोट' देना आवश्यक हो गया। अध्यक्ष थे डा॰ राजेन्द्र प्रसाद जो न केवल हिंदी भाषी थे बल्कि हिंदी के कट्टर सर्मथक भी थे। अत: उन्होंने हिंदी के पक्ष में अपना कास्टिंग वोट दिया। बस, उसी एक वोट के कारण संविधान में हिंदी को राजभाषा लिख दिया गया जो व्यवहार में आज तक नहीं उतर पाई।

इस कहानी का वास्तविक रचनाकार कौन है, यह तो पता नहीं; पर कहानी सुनानेवाले कहानी कुछ इस अंदाज़ से सुनाते हैं जैसे संविधान सभा की रिपोर्टिंग उन्होंने ही की हो जबकि उन्हें संविधान सभा की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का पता ही नहीं कि संविधान सभा ने कोई भी निर्णय (राजभाषा का ही नहीं, कोई भी निर्णय) 'बहुमत' के आधार पर किया ही नहीं। वहाँ तो सारे निर्णय 'सर्व सम्मति' या 'लगभग पूर्ण सम्मति' से लिए गए थे। इसी तरह निर्णय करने का निंय संविधान सभा की शुरू की बैठकों में ही कर लिया गया था। इसके लिए विभिन्न प्रकार के उपाय किए गए थे जैसे-

१. संविधान सभा में होने वाली चर्चा से पहले ही कांग्रेस के विधान मंडल दल की बैठकों में संविधान के प्रत्येक प्रावधान पर खुलकर वाद-विवाद करना;

२. इन बैठकों में ग़ैर-कांग्रेसी 'विद्वानों ', जैसे, डा॰ भीमराव अंबेडकर, एन॰ गोपालस्वामी आयंगर, अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर आदि को भी आमंत्रित करना;

३. संविधान सभा की विभिन्न समितियों में अल्पसंख्यक वर्ग के हितों के प्रतिनिधियों के रूप में उन लोगों को भी लेना जो संविधान सभा के सदस्य नहीं थे;

४. संविधान सभा की सबसे महत्वपूर्ण समिति 'प्रारूप समिति (ड्राफ़्ट कमेटी)' में कांग्रेस के केवल एक सदस्य- कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी को रखना और समिति की अध्यक्षता ऐसे व्यक्ति (डा॰ अंबेडकर) को सौंपना जो कांग्रेस का अब तक सबसे कटु आलोचक रहा था।

इस प्रकार के उपायों का परिणाम यह हुआ कि संविधान सभा ने सभी निर्णय सर्व सम्मति या पूर्ण सहमति से किए। यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि संविधान सभा में राजभाषा के लिए जो प्रस्ताव आए थे, वे केवल हिन्दी और अँग्रेज़ी के लिए नहीं, संस्कृत और बांग्ला के लिए भी थे; पर अंत में सहमति हिंदी के लिए बनी। प्रस्ताव पेश किया तीन 'अहिन्दी भाषियों' ने जिनके नाम थे - डा॰ भीमराव अंबेडकर, कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी और गोपालास्वामी आयंगर। संविधान सभा ने यह प्रस्ताव १४ सितम्बर १९४९ को स्वीकार किया। इसी उपलक्ष्य में १४ सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है। सर्वसम्मति बनाने के प्रयास के कारण ही हिन्दी का प्रयोग (उस समय) १५ वर्ष के लिए स्थगित रखा गया था।

अत: जब यह कहा जाता है कि हिंदी 'एकमत' से राजभाषा बनी तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि उसे केवल एक वोट से राजभाषा बनाया गया, बल्कि इसका अर्थ होता है कि उसे सबने एकमत होकर, एक राय से उसे राजभाषा बनाया। इसके बावजूद यह सच है कि सरकार अपने काम हिन्दी में नहीं कर रही है। संविधान के अन्य भी अनेक नियम ऐसे हैं जिनका पालन सरकार नहीं कर रही है। सरकार ऐसा क्यों कर रही है - इसके कारणों की खोज करनी चाहिए और उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए। एक कारण तो यही है कि हम भारतवासियों ने स्वयं अपने काम काज में हिन्दी को बिस्थापित कर दिया है। आइये, शुरुआत हम अपने से ही करें क्योंकि हर अच्छे काम की शुरुआत अपने से ही होती है। हिंदी दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प करें कि अपने कामकाज में हम हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे। विदेशों में रहने वाले हम भारतवासी इसे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बनाएँ। हमारे स्तर पर हिन्दी दिवस की सार्थकता इसी में है।

अधिक जानकारी के लिये देखिये-

(1) Shiva V. Rao, **Framing India‹s Constitution**: New Delhi; Indian Institute of Public Administratin, 1968.

(2) Grenville Austin, **The Indian Constitution – Cornerstone of a Nation**; Bombay; Oxford University Press; 1972; specially ”India‹s Original Contribution: Decision making by Consensus” pp 311 – 314).

जन्माष्टमी और हम

-रवीन्द्र अग्निहोत्री, बेलॉरट, विक्टोरिया

जन्माष्टमी उस महापुरुष का जन्मदिवस है जिसका सम्बन्ध महाभारत से है। यही वह ग्रंथ है जिसमें जीवन से सम्बन्धित सामग्री मिलती है और यही वह ग्रंथ है जिसमें उनके उपदेशों की अनमोल रचना 'गीता' समाई हुई है। विडम्बना यह है कि आज हम इन दोनों को ही भूले बैठे हैं। भगवान कृष्ण का जन्म अब से लगभग पाँच हज़ार वर्ष पहले उस युग में हुआ जिसे महाभारत काल कहते हैं। यही कारण है कि 'महाभारत' में अन्य पात्रों की तरह उनका भी वर्णन किया गया है; पर वहाँ उन्हें एक चरित्रवान, विद्वान और नीति-निपुण व्यक्ति बताया गया है। आज हम उनके इस रूप को तो बिलकुल भूल चुके हैं। आज तो हम बस उस कृष्ण को जानते हैं जिसकी चर्चा 'गोपियों','राधा','रासलीला' आदि के बिना शुरू ही नहीं होती जबकि इनका महाभारत में दूर-दूर तक कोई ज़िक्र ही नहीं है। इनका सम्बन्ध तो बारहवीं शताब्दी के बंगाल/उड़ीसा के संस्कृत कवि जयदेव के काव्य ग्रन्थ 'गीत गोविन्द' से है जो न तो ऐतिहासिक-ग्रंथ है और न ही धर्म-ग्रंथ।

'गीता' वह ग्रंथ है जिसमें भारतीय चिंतन का, हमारे दर्शनों का, उपनिषदों का सभी का सार है। इस ग्रंथ ने भारतीय चिन्तन को इतना अधिक प्रभावित किया है कि इसके बिना भारतीय संस्कृति को समझा ही नहीं जा सकता। 'गीता' का प्रभाव केवल भारत तक ही सीमित नहीं रहा है। प्राचीन और मध्य काल में एशिया के, प्राय: सभी देशों में गीता के सन्देश का, और उसके माध्यम से भारतीय चिंतन का व्यापक प्रसार हुआ। यदि यह कहा जाए कि आधुनिक विश्व ने भारत को गीता के माध्यम से ही जाना है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। विदेशों के जिन विद्वानों का परिचय इस ग्रंथ से हुआ वे इस से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इनमें एक ओर हेनरी थोरो, राल्फ़ वाल्डो इमर्सन, रोमाँ रोला, टी॰ एस॰ इलियट, डब्लू॰ बी॰ यीट्स, आंद्रे मोरवा जैसे विचारक, कवि और लेखक हैं, तो दूसरी ओर भौतिक विज्ञान में नोबुल पुरस्कार प्राप्त एरविन श्रडिंगर जैसे वैज्ञानिक भी हैं। श्रडिंगर ने अपनी पुस्तक 'माई व्यू आफ़ द वर्ल्ड' में लिखा है कि सृष्टि के अन्तिम सत्य को जानने के लिए उपनिषद और गीता की दृष्टि भी आवश्यक है। कुछ ऐसी ही बात विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार आर्नोल्ड टायनबी ने भी कही है। उन्होंने लिखा है,'मनुष्य जाति के सामने इस समय जो महान संकट उपस्थित है, उस से निस्तार भारतीय मार्ग द्वारा ही पाया जा सकता है। इस मार्ग को समझने का सर्वोत्तम साधन 'गीता' है।

हमारे यहाँ 'गीता' को धार्मिक ग्रंथ का जो सम्मान दिया गया है वह इसलिए क्योंकि इसमें उन समस्याओं पर विचार किया गया है जिनका सम्बन्ध हर मनुष्य से है। जैसे, मनुष्य के रूप में हमारा कर्तव्य क्या है, हमारे दुइख कैसे दूर हो सकते हैं, हमें वैयक्तिक और सामाजिक जीवन कैसे बिताना चाहिए, हमारे जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है आदि। क्या हम ऐसे प्रश्नों पर विचार करते हैं? यदि विचार करना चाहते हैं और ऐसे प्रश्नों के उत्तर खोजना चाहते हैं तो गीता का केवल पाठ नहीं, 'अध्ययन' कीजिए। जन्माष्टमी का यही सन्देश है।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

२ सितम्बर (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी), ५ सितम्बर (पितृ-दिवस, ऑस्ट्रेलिया), १० सितम्बर (ईद), ११ सितम्बर (गणेश चतुर्थी), १४ सितम्बर (हिन्दी-दिवस), ८ से १६ अक्टूबर (नवरात्रि), १४ अक्टूबर (दुर्गाष्टमी), १७ अक्टूबर (दशहरा)।

सूचनाएँ

१. महफ़िल नाइट -डा॰ श्रद्धा रेड्डी का संगीत कार्यक्रम (शुक्रवार, १७ सितम्बर)
स्थान - कोबर्ग लाइब्रेरी हॉल. कोबर्ग में लुइसा और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर।
समय - रात के ८ बजे से १० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिये डा॰ शरतचन्द्रन से (०३) ९३६६६ ५४४४ पर सम्पर्क कीजिये।

२. डांडिया २०१० - बॉलीवुड स्टाइल (प्रीति-पिंकी तथा साथियों के साथ)
स्थान तथा तिथि - सेंट किल्डा एक्वाटिक सेन्टर, मेल्बर्न (२४-२५ सितम्बर)
ओलम्पिक पार्क, सिडनी (१,२,३ अक्टूबर)
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क कीजिये - रश- ०४११ ०८२ ९३७ (मेल्बर्न)
गुलराज- ०४१८ ८८६ ९६७ (सिडनी)

३. संगीत-संध्या (शनिवार, २ अक्टूबर)
स्थान - वेवर्ली मेडोज़ प्राइमरी स्कूल, ह्वीलर्स हिल, मेलबर्न (मेलवे संदर्भ ७१ जी ११)
समय - रात के ८.०० बजे से १० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए राधेश्याम गुप्त जी को (०३) ९९४६ २५९५ अथवा (०४०२)०७४२०८ पर फ़ोन कीजिए अथवा निम्नलिखित वेबसाइट देखिये -
http://www.sharda.org/Events.htm

४. डांडिया बैश-२०१०
स्थान तथा तिथि - स्पोर्टस् ऐण्ड एक्वाटिक सेन्टर, एलबर्ट पार्क (२ अक्टूबर) रोज़हिल गार्डेन्स, सिडनी (३ अक्टूबर)
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क कीजिये - ०४३० १७६ ०१७

अब हँसने की बारी है

दो महिलाए

मरने के बाद, दो महिलाओं की भेंट चित्रगुप्त के दरबार में हुई, जहाँ उनके पाप-पुण्यों का लेखा-जोखा किया जा रहा था।
पहली महिला - कहो बहन, तुम्हारी मौत कैसे हुई?
दूसरी महिला - ज़्यादा ठंड लगने के कारण और तुम्हारी...?
पहली महिला - 'हार्ट-अटैक' के कारण। दरअसल हुआ यह कि मुझे अपने पति पर शक था। एक दिन मुझे पता चला कि वे घर में किसी अन्य स्त्री के साथ हैं। मैं फ़ौरन घर पहुँची तो देखा कि मेरे पति आराम से अकेले टेलीविज़न देख रहे हैं।
दूसरी महिला - फिर क्या हुआ?
पहली महिला - ख़बर पक्की थी, इसलिये मुझे विश्वास न हुआ। मैंने उस स्त्री को घर के कोने-कोने में, पर्दों के पीछे, बाग़ीचे में, तहखाने में, यहाँ तक कि अलमारी, संदूक़ तक में भी ढूँढा पर वह कहीं न मिली। मुझे इतना मानसिक तनाव हुआ कि मेरा रक्त-चाप, जो पहले से ही बढ़ा रहता था, अत्यधिक बढ़ गया और मुझे 'हार्ट-अटैक' हो गया, जिससे मेरी मौत हो गई।
दूसरी महिला - काश! तुम ने फ़्रीज़र में भी देख लिया होता तो हम दोनों मरने से बच जातीं।